ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

काव्य और संगीत का विभिन्न तर्को के आधार पर सम्बन्ध

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0जी0पी0जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0।

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 13 Jan 2019 ; Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

संगीत तथा काव्य वैदिक काल से अन्यान्याश्रित तथा घनिष्ठ रहे है। सामवेद भारतीय संगीत कला का प्राचीनतम निदर्शन है। सामवेद का स्रोत तत्कालीन लोक संगीत ही रहा है। सामवेद की ऋचाओं को काव्य मानते हुये सामवेद के उदांत, अनुदांत, स्वारित में उनका गायन होता था। प्राचीनता प्राचीन प्रबन्ध गान संगीत और काव्य के सम्बन्ध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्राचीन संगीत वांडमय में प्रबन्ध गान को नियमों में बंधे हुये गीत के रूप में माना जाता है। प्रबन्ध शब्द तथ्ज्ञा संगीत, संगीत और काव्य के सम्बन्ध की प्राचीनता की पुष्टि करते है।

मुख्य शब्द– काव्य, संगीत के विभिन्न तर्क, प्राचीन प्रबन्ध गान संगीत और काव्य।

परिचय

ऐतिहासिक दृष्टि से संगीत तथा काव्य का अध्ययन करने के बाद पाया गया कि मध्यकाल–संगीत और काव्य की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। मध्यकाल भक्ति आन्दोलन का युग रहा है जिसने सूर, तुलसी, मीरा, रसखानि, परमानन्ददास, स्वामी हरिदास, कुम्भनदास, हरिराम व्यास, छीतस्वामी जैसे भक्त कवियों का जन्म दिया। ये भक्त कवि संगीतकार भी थे। इन्होने संगीत और काव्य के माध्यम से सोते हुये जनमानस में नयी चेतना उत्पन्न की।

संगीत तथा काव्य अनेक दृष्टियों समानप है। भाव, कल्पना, बुद्धि, शैली, तत्व किसी न किसी रूप में दोनो ही कलाओं में सहयोग प्रदान करते है।

काव्य का प्राण – भाव तत्व जहाँ काव्य सृजन का आधार है तथा रसानुभूति, तनमयता और आत्मसंतुष्टि का साधक है वहाँ संगीत भी भावतत्व के सहयोग से श्रोताओं को रसानुभूति कराता है तथा स्वर लहरी के माध्यम से तल्लीनावस्था प्रदान कर आत्म संतुष्टि प्रदान करता है।

भाव तत्व – संगीत और काव्य में माधुर्य, हृदयस्पर्शिता, स्वाभाविकता का गुण उत्पन्न करता है। इन कलाओं की उत्कृष्टता का आधार उत्कृष्ट भाव होते है। दोनो ही कलायें, सुख–दुख, उल्हास, विषाद, आदि भावों की अभिव्यंजक एवं आनन्दानुभूति कराने में सक्षम है।

कल्पना – कल्पना मानसिक सृष्टि है। कल्पना तत्व के सहचर्य से काव्य और संगीत में नवीनता, विलक्षणता, सूक्ष्मता, चमत्कारिता का समावेश होता है। संगीतकार अपने मनोभावों को नयी पद्धति, नये रूप में रखने के लिए तथ्ज्ञा कवि अपनी अनुभूतियों को नवीनरूप या नये ढ़ंग से प्रस्तुत करने हेतु कल्पना तत्व का सहारा लेता है। संगीतकार और कवि की लोकप्रियता का आधार विशिष्ट कल्पना ही है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

बुद्धि – बुद्धि का सहयोग दोनो कलाओं में है। संगीत में जहां बुद्धि तत्व ताल स्वरादि के उचित प्रयोग का बोध कराता है। वही काव्य में बुद्धि तत्व भाव और कल्पना को नियंत्रित कर उचित शब्द तथा छन्दादि के प्रयोग का निर्देश देता है।

नाद सौष्ठव – संगीत तथा काव्य दोनो, ही नाद सौष्ठव के लिए मधुर एवं कर्ण प्रिय शब्दावली तथा नय और स्वरादि की अपेक्षा रखते है।

बिम्ब विधान – की दृष्टि से संगीतकार जहां राग निबद्ध संदिशों द्वारा समाज की मनोवृत्ति, स्थिति, लोक जीवन का बिम्ब प्रस्तुत करता है, कवि भी अपनी रचनाओं से समाज का बिम्ब उपस्थित करता है।

मार्मिक स्थल – संगीत और काव्य के मार्मिक स्थल देखे जा सकते है। संगीत में मीड, गण, मुर्की, श्रुति, विवादी स्वर, अलपा आदि की कुशलता से मार्मिक स्थल के संकेत मिल जाते है। और काव्य में करूणादि प्रसंगों से मार्मिक स्थल प्राप्त होते है।

मनुष्यत्व की उच्च भूति – दोनो कलायें मनुष्य को उत्कृष्टता की ओर ले जाने के साथ उसका मनोरंजन तथा ज्ञान वर्धन कराती है। वही संगीत और काव्य उत्कृष्ट है जो मानव को सत्य की ओर उन्मुख करने के साथ ही भौतिक समृद्धि को सन्तुलित करें।

मूर्ताधार की सूक्ष्मता – भी संगीत और कावय में अन्य कलाओं की अपेक्षा अधिक है। संगीत और काव्य व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिगत है। जिस प्रकार संगीत विश्व व्याप्त नाद, स्वर, लय, आदि से समन्वित होने के कारण व्यक्ति निष्ठ नहीं है उसी प्रकार काव्य समग्र मानवाभूतियों का संग्रह होने के कारण समष्टिगत है।

उपर्युक्त विवेचन के अतिरिक्त और भी तथ्य हैं जो संगीत और काव्य के अटूट सम्बन्ध की पुष्टि करते है –

ऐसे विद्वान जिन्होने संगीत और काव्य दोनो का ही चिंतन किया है उनमें डा0 करूणालाल उल्लेखनीय है जिन्होने देते समय कहा – तात्विक दृष्टि से सृष्टि का हर पदार्थ सम्बन्धित है इस दृष्टि से संगीत और काव्य में तात्विक सम्बन्ध तो होना ही है। तत्व सभी वस्तुओं का आधार है। तात्विक दृष्टि से कोई रूप भिन्न नहीं होता। भेद तो बाहय होता है। आकृति की दृष्टि से संगीत और काव्य अलग लग सकते हैं परन्तु तात्विक दृष्टि से नहीं। संगीत को गीत, स्वर, लय ताल से तथा काव्य की छन्दोबद्धता, गेयत्व और लयात्मकता से आधार प्राप्त होता है।

एक अन्य विद्वान श्री श्याम नारायण कपूर भी संगीत और काव्य का सापेक्ष सम्बन्ध स्वीकार करते है। उनका विचार है अच्छे काव्य के लिए संगीत की तथा अच्छे संगीत के लिए काव्य की जरूरत होती है। भारतीय चिन्तकों ने जीवन का लक्ष्य आनन्द की उपलब्धि माना है इस दृष्टि से संगीत और काव्य इस उद्‌देश्य को पूरा करते है दोनो कलायें श्रोता के हृदय पर अमिट प्रभाव डालने में समर्थ हैं। उत्साहवर्धन का गुण जहां संगीत में है काव्य भी उत्साह वर्धन कुशलता से करता है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

मोक्ष मार्ग की प्रशस्ति में भी इन्हीं दोनो कलाओं को माध्यम बनाया जाता है। इसीलिए कबीर, तुलसी, सूर, मीरा, आदि भक्तों तथा सन्तों की लक्ष्य प्राप्ति का साधन संगीत और कविता ही बने।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि संगीत और काव्य परस्पर घनिष्ट है। ये अनन्योन्याश्रित ही नहीं एक दूसरे के पूरक है तथा सहोदरत्व की कल्पना करना अतिश्योक्ति नहीं है। इसी संदर्भ में कुछ विद्वानों के मल लेना उचित होगा।

संगीतिज्ञों की दृष्टि में – पं0 ओंकार नाथ ठाकुर के अनुसार – छन्दोवाक्य प्रयोगेषु, काव्य छन्दसु, गान काव्येष तान संचालन गानेष उच्यते।

क– ''मेरी दृष्टि में ककरादि व्यंजनों के साथ, अकारादिस्वरों का जो सम्बन्ध है, देह के साथ आत्मा का जो सम्बन्ध है वही संगीत का कविता से सम्बन्ध है।''

ख– ''काव्य और गान एक दूसरे से मिल हुये है।''

माता सरस्वती के ये दो स्तन साहित्य और संगीत है। उन्हीं का दूध पीकर साहित्यकार, साहित्यकार बन गया और संगीतकार संगीतकार बन गया।

प्रसिद्ध संगीत विद्वान एवं विचारक डा0 जन्म देव के अनुसार –

''काव्यानन्द और ब्रहमानन्द के सहोदरत्व की बात सुविदित है। भारतीय दृष्टिकोण से कला यद्यपि काव्य से भिन्न है तथापि उसका उद्‌देश्य आनन्द ही नहीं परमानन्द है।''

गायनाचाग्य पं0 विष्णु दिगम्बर पुलस्कर के अनुसार –

''संगीत और काव्य का जब मेल होता है, तब सोने में सुगंध आती है। सरस्वती की वीणा पुस्तक का मेल इसी का निदर्शन है।

संगीत के प्रख्यात विद्वान डा0 शरच्चन्द्र श्रीधर परांजये के अनुसार – संगीत नाद प्रधान साहित्य है और साहित्य शब्द प्रधान संगीत है। दोनो का पार्थक्य धानि की सम्भावनाओं से भरा है।

साहित्यकारों तथा अन्य विचारकों का मत–

1– प्रख्यात कवियत्री महादेवी वर्मा के अनुसार – ''काव्य सार्थक शब्दों का समूह है और संगीत लय प्रधान ध्वनियों का समूह है। स्वत के साथ जब सार्थक शब्दावली की संगति हो जाती है तब संगीत और काव्य दोनो व्याप्ति और गहराई की दृष्टि से जीवन की अपलक्ष्य सीमायें छू लेते है।

2– कविवर सुमिलानन्द पन्त ने संगीत और काव्य की मैत्री पर आस्था प्रकट की है –

''भाव गीति की स्वर लय मैत्री सी

षड ऋतुयें नित संगति मे आती।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

3– सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी – भी संगीत और काव्य के परस्पर सहयोग की सम्भावना पर बल देते हुये दोनों के सहयोग को आवश्यक मानते है।

काव्य और संगीत की विचारक डा0 ऊषा गुप्ता के अनुसार ''साहित्य का निर्माण भी तो संगीत मानकों ने ही किया है और साहित्य के समस्त अंगो में संगीत का किसी न किसी रूप में थोड़ा बहुत योग आवश्यक रहता है। कविता तथा गद्य को वे ही पंक्तियां सबसे अधिक स्मरण तथा उद्धत की जाती है जो संगीतमय होती है।

डा0 आशा लता प्रसाद के अनुसार –

''संगीत जिस भाव को लेकर स्वरों के संकेत मात्र से अवगत कराता है कविता उसे रूप देकर हृदय पर अंकित कर देती है। इसी प्रकार काव्य को इसका चरम लक्ष्य रमणीयता होते हुये भी आकर्षण के लिए संगीत से रागत्व लेने अपेक्ष्य होती है।

पाश्चात्य विद्वानों का मत – एडगर एलन पो के अनुसार – Poetry is the rhythmic creation of Beauty"

कविता को सौन्दर्य की संगीत मय सृष्टि कहते है।

बाट्स और डाण्टन के अनुसार– "Poetry is the concerete and artistic expression of the human mind in emotional and rhythmical language.

भावात्मक और संगीतात्मक भाषा के मानव उपर्युक्त मस्तिष्क की प्रबल अभिव्यक्ति को काव्य कहते हैं।

इस विवेचना से यह सिद्ध है कि सभी विद्वानों ने चाहे वे संगीतज्ञ हो, साहित्यकार, या विचारक संगीत और साहित्य के सम्बन्ध की घनिष्ठ माना है।

सारांश –

संगीत और काव्य का विवेचन करते समय विभिन्न विद्वानों के विचार दृष्टिगत हुये जिसके आधार पर कुछ तथ्य प्राप्त हुये जो निम्न हैं –

संगीता अनादि है, गन्धर्व वेद का दूसरा नाम ही संगीत है। आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से संगीत को महिमामंडित किया गया है। आध्यात्मिक दृष्टि संगीत को मोक्षप्रद आत्मा को नश्वरता से अनश्वरता की ओर ले जाने वाला मानती है तो दार्शनिक दृष्टि संगीत के द्वारा मानव को सत्यं शिवं सुन्दरम् की दिव्य अनुभूति करवा सकती है।

संगीत की क्षमता असीमित है। वह समस्त जड़ चेतन को अपने वश में कर चारा पुरूषार्थो – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति एक साथ करवा सकती है। संगीत निर्भरानन्द प्रदाता है। मनुष्य का मनोरंजन करने के साथ साथ वह सन्तों के लिए मार्गदर्शक, प्रेमियों के लिए मित्र, दुखी–कष्टी लोगों को सांत्वना प्रदान करने वाला है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

परिभाषा की दृष्टि से संगीत की प्रथम स्वतंत्र और स्पष्ट परिभाषा संगीत रत्नाकर में की गयी है जो आज भी मान्य है तथा उसी को आधार मानकर विद्वान संगीत शास्त्र का अध्ययन करते है। साधारण तौर पर सभी ललित कलायें परस्पर जुड़ी हुयी हैं। संगीत कला का हस्तक्षेप सभी ललित कलाओं में कुछ न कुछ अवश्य है। फिर भी किसी कला को श्रेष्ठ और किसी कला को निम्न कहना उचित नहीं क्योंकि सभी कलाओं का उद्देश्य चक्षुरिन्द्रयों – कर्णेन्द्रियों को आनन्दित, प्रफुल्लित कर मानव हृदय को रसमय बनाते हुये उन्नति की ओर ले जाना है।

इन कलाओं में संगीत और काव्य आपस में बहुत घनिष्ठ है। गायक और कवि का एक ही अर्थ है। दोनो में स्वर – लय की मैत्री है। संगीतमय विचार ही काव्य है और कविता सौन्दर्य की संगीतमय सृष्टि है। दोनो का मेल सोने में सुगन्ध जैसा है। काव्य विचार देता है और संगीत उसका संवाहक स्वर है।

संदर्भ – सूची

1. कविता और संगीत पं0 ओंकार नाथ ठाकुर – संगीत पत्रिका मार्च 1952, पृ0 248।
2. संगीत पत्रिका पं0 ओंकारनाथ मई 1951, पृ0 273।
3. ठाकुर जयदेव सिंह, भारतीय संस्कृति में ललित कला का महत्व प्रकाशीय से।
4. शायनाचार्य विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, साक्षात्कार, मुकुटधर पाण्डेय, माधुरी दिगम्बर 1927, पृ0 373।
5. साहित्य और संगीत – संगीत निबन्ध संग्रह, श्री हरिशचन्द्र श्रीवास्तव पृ0 75।
6. सन्धिनी – चिन्तन के क्षण, महादेवी वर्मा, पृ0 24, दृष्टव्य छायावादी काव्य में संगीत कौशलनन्दन गोस्वामी पृ0 –
7. सुमित्रानन्दन पंत ग्रन्थावी। खण्ड–5। लोकायतन पृ0 169।
8. हिन्दी के आधुनिक कवि, व्यक्तित्व और कृतित्व पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, पृ0 68।
9. हिन्दी के कृष्ण भक्ति कालीन साहित्य में संगीत – डा0 ऊषा गुप्ता पृ0 79।
10. सूर काव्य और संगीत तत्व – डा0 आशालता प्रसाद पृ0 – 8।
11. Quoted from - An Introduction to the study of Literature by W.H. Hudson - Page 65.